Class-IX Hindi Kshitij
पाठ-1 पृ०130

साखियाँ

प्रश्न—1. 'मानसरोवर' से कवि का क्या आशय है ?

उत्तर—'मानसरोवर' से कवि का आशय है—मन रूपी सरोवर।

प्रश्न—2. कवि ने सच्चे प्रेमी की क्या कसौटी बताई है ?

उत्तर—सच्चा प्रेमी वही होता है जिसके मिलने से बुराइयों का विष भी अच्छाइयों के अमृत में बदल जाता है। विष को अमृत में बदल देना ही सच्चे प्रेमी की कसौटी है। उसके मिलने से वियोग रूपी विष मिलन-सुख से उत्पन्न अमृत में परिवर्तित हो जाता है।

प्रश्न—3. तीसरे दोहे में कवि ने किस प्रकार के ज्ञान को महत्त्व दिया है ?

उत्तर—तीसरे दोहे में कवि ने सहज समाधि द्वारा प्राप्त सहज ज्ञान को महत्त्व दिया है।

प्रश्न—4. इस संसार में सच्चा संत कौन कहलाता है ?

उत्तर—धर्म के क्षेत्र में अनेक संप्रदाय और मत-मतांतर प्रचलित हैं। जो संत इन संप्रदायों और मत-मतांतरों के पक्ष-विपक्ष के चक्कर में न पड़कर निरपेक्ष भाव से ईश्वर की भक्ति करता है वही इस संसार में सच्चा संत कहलाता है।

प्रश्न—5. अंतिम दो दोहों के माध्यम से कबीर ने किस तरह की संकीर्णताओं की ओर संकेत किया है ?

उत्तर—अंतिम दो दोहों के माध्यम से कबीर ने हिंदू-मुसलमानों में भेद करना, राम और रहीम को अलग-अलग मानने और जाति-पाँति, ऊँच-नीच तथा कुल-जाति की श्रेष्ठता मानने जैसी संकीर्णताओं की ओर संकेत किया है।

Scanned by TapScanner

प्रश्न—6. किसी भी व्यक्ति की पहचान उसके कुल से होती है या उसके कर्मों से? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर—किसी व्यक्ति की पहचान उसके उच्च कुल में उत्पन्न होने से नहीं होती, उसकी उच्चता की पहचान तो उसके कर्मों से होती है। उच्च कुल में उत्पन्न होने वाला व्यक्ति यदि निम्न कोटि के कर्म करे तो उसका कुल उसकी पहचान नहीं बन सकता। इस स्थिति में वह निंदनीय एवं हेय है। इसके विपरीत निम्न वर्ग में उत्पन्न होने वाला व्यक्ति यदि सद्कर्म करता है तो उसके सद्कर्मों से उसकी पहचान होती है। कोइ उसकी कुल-जाति को नहीं पूछता। उसके अच्छे कर्मों के कारण उसे पहचाना और जाना जाता है।

प्रश्न—7. काव्य सौंदर्य स्पष्ट कीजिए—

हस्ती चढ़िए ज्ञान कौ, सहज दुलीचा डारि।
स्वान रूप संसार है, भूँकन दे झख मारि॥

उत्तर—भाव-सौंदर्य—कवि ने सहज ज्ञान के महत्त्व को प्रतिपादित किया है। भक्त को सहज समाधि द्वारा ईश्वर अथवा ज्ञान को प्राप्त करना चाहिए। उसे कुत्ते की भाँति भौंकने वाले टीका-टिप्पणी करने वालों की आलोचना की चिंता नहीं करनी चाहिए, क्योंकि वे भौंक-भाँक कर चुप हो जाएँगे।

काव्य-सौंदर्य—कबीर ने रूपक अलंकार के द्वारा सहज ज्ञान की महिमा का वर्णन किया है। ज्ञान रूपी हाथी, सहज रूपी दुलीचा, स्वप्न रूपी संसार में रूपक अलंकार है। टीका-टिप्पणी करने वाले की समानता भौंकने वाले कुत्तों से की है। भौंकने दे और झख मारना जैसे मुहावरों का प्रयोग हुआ है। लाक्षणिकता है। दोहा छंद है। सरल ब्रजभाषा है।

सबद

प्रश्न—8. मनुष्य ईश्वर को कहाँ-कहाँ ढूँढ़ता है?

उत्तर—मनुष्य ईश्वर को मंदिर-मस्जिद, काशी-काबा जैसे तीर्थस्थलों, कर्म-कांडों, योग-वैराग्य में ढूँढ़ता फिरता है।

प्रश्न—9. कबीर ने ईश्वर-प्राप्ति के किन प्रचलित विश्वासों का खंडन किया है?

उत्तर—कबीर ने ईश्वर-प्राप्ति के लिए निम्नलिखित प्रचलित विश्वासों का खंडन किया है—

(1) मंदिर-मस्जिद आदि में पूजा-उपासना से ईश्वर मिलता है।
(2) ईश्वर काबा और काशी जैसे तीर्थ-स्थलों की यात्रा करने से प्राप्त होता है।
(3) कर्म-कांडों द्वारा ईश्वर को प्राप्त किया जा सकता है।
(4) ईश्वर को योगी बनकर अथवा संन्यासी बनकर प्राप्त किया जा सकता है।

प्रश्न—10. कबीर ने ईश्वर को 'सब स्वाँसों की स्वाँस में' क्यों कहा है?

उत्तर—ईश्वर का निवास प्रत्येक प्राणी में है। वह साँस के रूप में प्रत्येक जीवात्मा में विद्यमान है। प्रत्येक प्राणी की साँस ही ईश्वर है। इसीलिए कबीर ने ईश्वर को सब स्वाँसों की साँस में कहा है।

रचना और अभिव्यक्ति

प्रश्न—11. संकलित साखियों और पदों के आधार पर कबीर के धार्मिक और सांप्रदायिक सद्भाव संबंधी विचारों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—कबीरदास ज्ञानमार्गी शाखा के संत कवि हैं। धर्म के आधार पर उनमें संकीर्णता नहीं है। वे काबा-कैलाश, राम-रहीम में अंतर नहीं करते। उनकी दृष्टि में भक्त को विभिन्न संप्रदायों से निरपेक्ष होकर ईश्वर की भक्ति करनी चाहिए। उन्होंने हिंदू-मुसलमान दोनों के बाह्याडंबरों का खंडन किया और उनकी एकता का समर्थन किया। उनके

Scanned by TapScanner

अनुसार ईश्वर मंदिर-मस्जिद, काबा और कैलाश में नहीं है, वह तो प्रत्येक प्राणी के हृदय में निवास करता है। ईश्वर को अपने ही हृदय में खोजना चाहिए। उन्होंने निरपेक्ष होकर ज्ञान द्वारा एक ही ईश्वर को प्राप्त करने पर बल दिया है।

भाषा-अध्ययन

प्रश्न—12. निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखिए—
पखापखी, अनत, जोग, जुगति, बैराग, निरपख,

उत्तर—

पखापखी	—	पक्ष-विपक्ष	अनत	—	अन्यत्र
जोग	—	योग	जुगति	—	युक्ति
बैराग	—	वैराग्य	निरपख	—	निष्पक्ष, निरपेक्ष

Scanned by TapScanner